# पावन जीवन चरित्र

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी का जीवन चरित्र

SGD

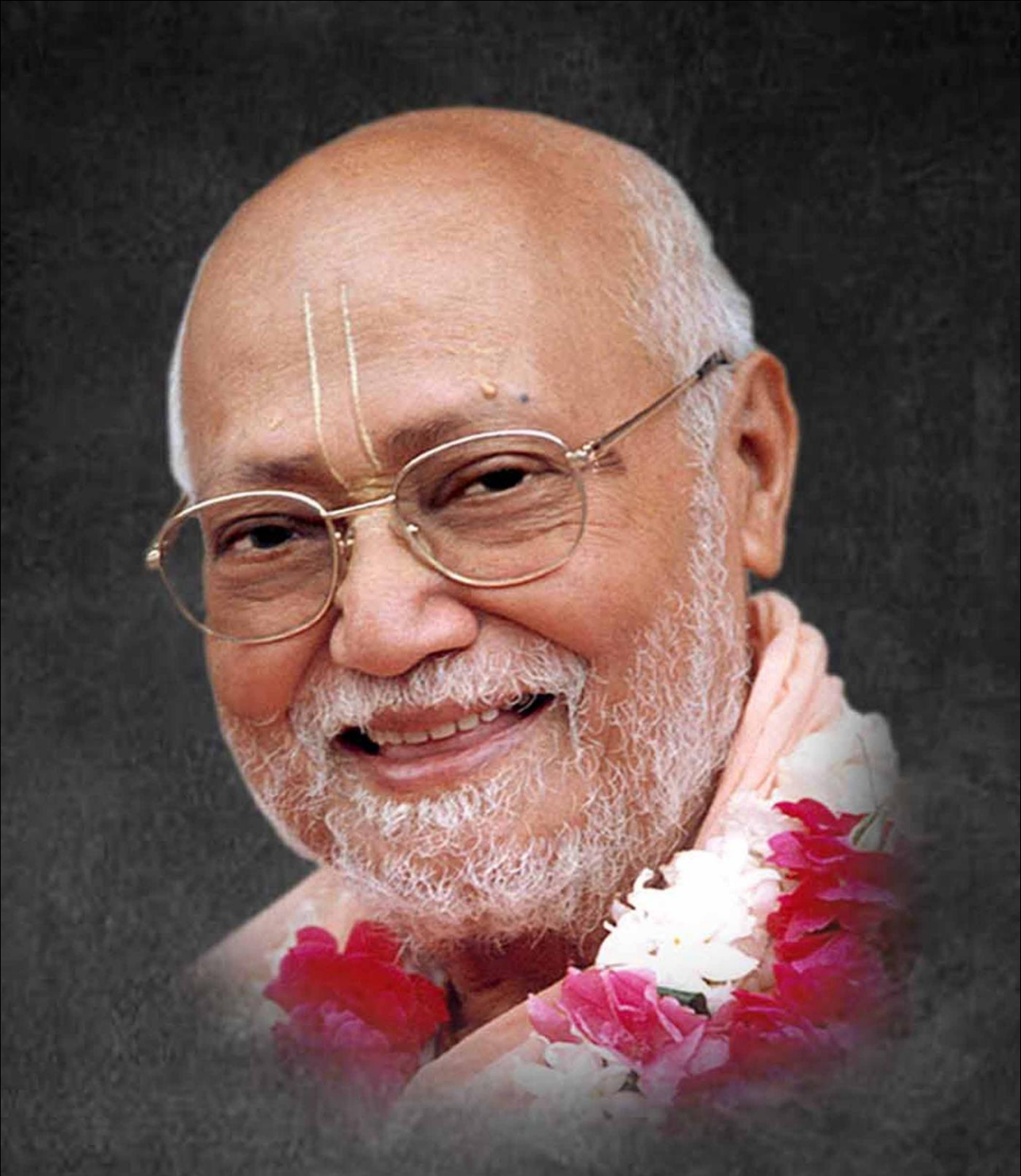

निखिल भारत श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ
प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता,
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108
श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज विष्णुपाद जी के
प्रियतम शिष्य, त्रिदण्डिस्वामी
श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज
जी द्वारा सम्पादित

SGD

# तृतीय खण्ड

## भाग – 6

## पुरुषोत्तमधाम के विश्व-धर्म-सम्मेलन में श्रील गुरुदेव

श्रीलगुरुदेव

उड़ीसा के विशिष्ट व्यक्तियों के प्रयास से पुरी में चक्रतीर्थ के नज़दीक ही समुद्र के तट पर एक विशाल सभामण्डप में 1 दिसम्बर (1974) रविवार से 5 दिसम्बर वृहस्पतिवार तक विश्व-धर्म-सम्मेलन का अधिवेशन हुआ था। सम्मेलन की अभ्यर्थना समिति के सभापति थे - उद्योगपति श्री वंशीधर पाण्डा व सम्पादक थे पण्डित रघुनाथ मिश्र जी। सम्मेलन के आयोजकों में कटक हाईकोर्ट के माननीय न्यायाधीश श्री रंगनाथ

मिश्र भी थे। उक्त धर्म-सम्मेलन का उद्घाटन दक्षिण के कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती महाराज जी ने किया था। इस विश्व-धर्म-सम्मेलन में [क] हिन्दूधर्म के प्रतिनिधि थे- (1) परमाराध्य श्रील गुरुदेव जी, (2) पुरी के गोवर्धन पीठ के शंकराचार्य श्री निरंजन देव तीर्थ महाराज जी (3) डिवाइन लाइफ सोसायटी के स्वामी श्री चिदानन्द जी महाराज, (4) श्री मिन्टु महाराज जी, (5) पुरी के रामकृष्ण मठ के श्री तटस्थानन्द जी महाराज, (6) स्वामी श्री रामानन्द जी भारती, (7) स्वामी

शान्तानन्द जी महाराज, (8) कवियोगी शुद्धानन्द जी भारती और (9) स्वामी श्री हरिहरानन्द जी गिरि|

(ख) इस्लाम धर्म के प्रतिनिधि थे - श्री ममताज अलि

(ग) ईसाई धर्म के प्रतिनिधि थे- आर्क बिशप हेनरी डी० सौज़ा

(घ) बाहाई धर्म के प्रतिनिधि थे- डा० मुन्जे

(ङ) अहमदिया सम्प्रदाय के प्रतिनिधि थे - श्री एस० सी० सालाम

विश्व-धर्म-सम्मेलन में प्रतिदिन सुबह और दोपहर में अधिवेशन होता था। माननीय श्रीरंगनाथ मिश्र जी ने श्रील गुरुदेव जी से कहा कि श्रील गुरुदेव एक दिन सभापति होंगे तथा एक दिन भाषण देंगे, श्रीमठ के सैक्रेटरी, श्रीमद् भक्ति बल्लभ तीर्थ महाराज जी को भी एक दिन बोलना होगा, किन्तु श्रीगुरुदेव जी को प्रतिदिन दोनों समय सभा में बैठना होगा | उसी अनुसार श्रील गुरुदेव दो बार ही अपने पार्षदों सहित धर्म-सम्मेलन में जाकर बैठते थे। एक दिन बाँकी कालेज के भूतपूर्व अध्यक्ष, श्री राजकिशोर राय

जी ब्राह्मणों की विशेष सभा में पौरोहित्य के लिये श्रीगुरुदेव जी को ले गये, जिस कारण उस दिन विश्व-धर्मसम्मेलन में दोपहर बाद के अधिवेशन में गुरुदेव जी नहीं जा पाये। अगले दिन जब श्रील गुरुदेव विश्व-धर्म-सम्मेलन की सभा में योगदान के लिये सभा-मण्डप में बैठे तो सभा में पहले से मौजूद कुछ विशिष्ट व्यक्तियों ने श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ के सैक्रेट्ररी की ओर संकेत करके उनसे मिलने के लिये कहा। श्रीमठ के सैक्रेट्ररी जब उनके पास गये तो उन्होंने पूछा कि श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ के प्रतिष्ठाता आचार्य

कल दोपहर बाद की सभा में क्यों नहीं आये। सैक्रेट्ररी ने उसके जवाब में कहा कि वे ब्राह्मणों के बुलाने पर उनकी सभा में गये थे, इसलिये नहीं आ पाये । सैक्रेटरी की बात सुनकर उन विशिष्ट व्यक्तियों ने कहा कि कल आपके गुरु जी नहीं आये तो सभा जमी नहीं, सभा तो हुई परन्तु सभा-मण्डप का सौन्दर्य और मर्यादा वह नहीं बनी जो आपके गुरुजी के आने से होती थी। ये उनका कहना बिल्कुल ठीक था क्योंकि बाहर से देखने में भी श्रील गुरुदेव दीर्घाकृति-गौरकान्ति और

सौम्यमूर्त्ति के थे। उनको देखने से ही सभी आकृष्ट हो जाते थे।

श्रीलगुरुदेव